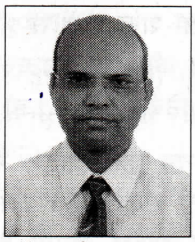

डॉ. सुशील अग्रवाल

मानसिक अवसाद के ज्योतिषीय योग एवं उपाय

मन व मस्तिष्क के विकार मानसिक रोग कहलाते हैं जैसे– अनिद्रा, सनकीपन, मिर्गी, बेहोशी, पक्षाघात, मंदबुद्धि, हिस्टीरिया, मस्तिष्क गाँठ (Brain Tumour), मस्तिष्क शोथ (Meningitis), मानसिक उन्माद/अवसाद आदि। यह लेख मानसिक अवसाद पर ही अधिक केन्द्रित रहेगा।

चिकित्सकीय दृष्टिकोण से मानसिक अवसाद रोग की श्रेणी में आता है जिसमें शरीर, मनोदशा और विचार शामिल होते हैं। जातक को जीवन के हर पहलू में चिंता, तनाव, भय, कुछ खोने और असफलता का डर लगा रहता है क्योंकि इस स्थिति में उसकी सकारात्मक सोचने–समझने की शक्ति निर्बल हो जाती है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उतार–चढ़ाव आना एक सामान्य सी बात है लेकिन मानसिक रूप से स्वस्थ जातक जल्दी ही उस समस्या को झेलने या सुलझाने का साहस जुटा लेते हैं इसीलिए हर प्रकार की उदासी को मानसिक रोग मानना उचित नहीं है।

अवसाद के कारण और लक्षण

मानसिक अवसाद की स्थिति उत्पन्न होने का कारण सामान्यतः किसी प्रियजन की मृत्यु, रोगावस्था, गिरी हुई आर्थिक स्थिति, जीविकोर्पाजन में रुकावट या बाधा, कार्यालय या घर में लगातार बेइज्जती होना आदि होता है। इस स्थिति में सामान्यतः निम्न लक्षण देखने को मिलते हैं :

- जातक को अपना जीवन बड़ा ही निरर्थक लगने लगता है।
- जातक को सदैव किसी अनिष्ट की आशंका रहती है जिससे वह बहुत डरा हुआ रहता है और उसे बुरे सपने भी आते हैं।
- जातक बहुत शक्की हो जाता है।
- जातक अन्य लोगों से मिलने की अपेक्षा अकेले में रहता है।
- जातक किसी विषय पर निरंतर चिंता करता रहता है और उसका मन एकाग्रचित्त नहीं रहता।
- जातक की नींद, भूख आदि या तो बहुत कम या बहुत अधिक हो जाती है।
- जातक को जल्दी गुस्सा आता है और उसका व्यवहार चिड़चिड़ा हो जाता है।
- चाहते हुए भी जातक को नकारात्मक विचारों को रोक पाने में मुश्किल होता है।
- जातक मादक पदार्थों के सेवन की ओर आकर्षित होता है।
- शारीरिक तौर पर जातक को सिर में दर्द होना, दिल की धड़कन तेज लगना, शरीर में कंपन महसूस होना, स्वयं को सदैव थका–थका सा महसूस करना आदि की शिकायत होती है।

ज्योतिषीय भाव, कारक, योग और दशा

ज्योतिषीय दृष्टिकोण से निम्न भाव, कारक और योग मानसिक अवसाद/उन्माद का प्रतिनिधित्व करते हैं :

भाव–भावेश

- लग्न या/और लग्नेश पीड़ित हो क्योंकि लग्न सामान्य स्वास्थ्य के अतिरिक्त दिमाग का भी प्रतिनिधित्व करता है। सूक्ष्म अध्ययन के लिए मेष राशि का भी आकलन करना चाहिए।
- यदि जातक की तार्किक शक्ति में कमी हो तो लग्न/लग्नेश के साथ–साथ पंचम भाव या/और पंचमेश भी निर्बल होता है। अगर दिमागी ट्यूमर आदि जैसा शारीरिक रोग हो तो केवल लग्न/लग्नेश ही निर्बल होने चाहिए।
- मानसिक रोग के प्रकार के अनुसार कुछ अन्य भाव/भावेश भी अपना योगदान देते हैं : तृतीय भाव दिमाग के निचले हिस्से यानि प्रवृत्ति सम्बंधित, चतुर्थ भाव भावुकता संबंधित, षष्ठम भाव अवचेतन मन संबंधित (जैसे सपने में देवी दिखाई देना आदि), नवम भाव उच्च दिमागी विकार संबंधित (जैसे देवी–देवता से बातें करना आदि) और द्वादश भाव बेहोशी की अवस्था एवं बेसुध दिमाग संबंधित।

कारक

• **चन्द्र** : मन के हारे हार है और मन के जीते जीत। सभी शास्त्रों ने चंद्रमा को निर्विवाद रूप से मन का कारक माना है। मानसिक रोगों में चंद्रमा की भूमिका सर्वाधिक होती है। मन की सबलता से आत्मबल में वृद्धि होती है जिससे जीवन के उतार–चढ़ाव से जूझने की क्षमता आती है। मानसिक रोगों में चंद्र का निर्बल होना आवश्यक है।

• **बुध** : बृहत्पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार बुध गूढ़ अर्थ से युक्त वाक्य बोलने के कारक हैं और फलदीपिका के अनुसार बुध पांडित्य, विद्या में बुद्धि, निपुणता, अच्छी वाक् शक्ति आदि के कारक हैं अर्थात, मानसिक रोग के संदर्भ में बुध को सांसारिक तार्किक शक्ति का कारक माना जा सकता है। मंद बुद्धि होने में बुध का भी पीड़ित होना आवश्यक है।

• **गुरु** : बृहत्पाराशर होरा शास्त्र एवं फलदीपिका के अनुसार गुरु बुद्धिमानी और शास्त्र ज्ञान के कारक हैं। मानसिक रोगों के संदर्भ में गुरु को विवेक का कारक माना जा सकता है।

• **मंगल** : उत्पातीय मानसिक रोगों में मंगल की भूमिका भी आती है। शास्त्रीय योगों में भी मंगल की भूमिका को वर्णित किया गया है।

चंद्र संबंधित योग

• **केमद्रुम योग** : बृहत्पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार यदि चंद्रमा से 2 एवं 12 स्थान में तथा लग्न से केंद्र में सूर्य को छोड़कर (राहु/केतु को भी छोड़कर) अन्य कोई भी ग्रह न हो तो केमद्रुम नामक योग होता है। इस योग के अशुभ फल कहे गये हैं। इस योग में जातक डरा हुआ और असहज सा रहता है क्योंकि चंद्रमा एक सौम्य ग्रह है और उसके दोनों ओर कोई सुरक्षा नहीं है।

• **गजकेसरी योग** : बृहत्पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार यदि लग्न अथवा चंद्र से गुरु केंद्र में हों और शुभ ग्रह मात्र से दृष्ट, युत हो तथा यदि अस्त, नीच और शत्रु राशि में नहीं हों तो गजकेसरी नामक योग होता है। इस योग में चन्द्र को अत्यधिक बल प्राप्त होता है।

• **अधियोग** : बृहत्पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार चन्द्र से 6, 7, 8 भावों में शुभ ग्रह हों तो अधियोग होता है। इस योग से भी चन्द्र को बल प्राप्त होता है। इस योग के साथ–साथ यदि बुध भी शुभ हो तो 'सोने पर सुहागा' माना जाना चाहिए।

चंद्रमा की युति

युति में युत ग्रह निर्बल एवं पीड़ित हो तभी अशुभ फल देते हैं। इसके अतिरिक्त युति–युक्त ग्रहों की अंशात्मक निकटता युति को अधिक प्रबल बनाती है। चंद्र के साथ विभिन्न ग्रहों की युति का निम्न फल होता है :

• **सूर्य–चन्द्र** : जातक गुस्से वाला या झगड़ालू होता है। आँखों के आगे अँधेरा छाना आदि भी सूर्य–चन्द्र युति से हो सकते हैं।

• **मंगल–चन्द्र** : जातक में बहुत जल्दी गुस्सा आने और हिंसक होने की प्रवृत्ति होती है।

• **शनि–चन्द्र** : यह युति मानसिक अवसाद उत्पन्न करती है। साढ़े–साती में गोचरवश शनि जन्मकालीन चन्द्र के साथ या आस–पास होने से भी मानसिक अवसाद की स्थिति उत्पन्न होती है यदि चंद्र निर्बल/पीड़ित हो।

• **राहु–चन्द्र** : यह युति जातक में फोबिया पैदा कर सकती है। जैसे जातक बार–बार सफाई करता है, बार–बार हाथ धोता है, जातक को नींद कम आती है, जातक के मन में आत्महत्या करने आदि जैसी प्रवृत्ति आती है। जातक शक्की हो जाता है आदि।

• **केतु–चन्द्र** : यह युति भी जातक को सनकीपन और जीवन निरर्थक होने की प्रवृत्ति देती है। जातक आत्महत्या जैसा जघन्य कदम तक उठा सकता है।

शास्त्रीय उन्माद योग

जातकतत्त्वम् के अनुसार निम्न योगों से जातक को उन्माद योग होता है :

• गुरु लग्नस्थ हो और सप्तम भावगत मंगल से दृष्ट हो या मंगल त्रिकोण भाव में हो।

• लग्न में शनि, द्वादश में सूर्य तथा त्रिकोण भाव में चन्द्रमा या मंगल हो।

• तृतीयेश षष्ठ भाव में हो, अस्त या नीच राशिगत हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हो।

• चन्द्रमा क्षीण हो, द्वादश भाव में शनि से युत हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हो।

• शनि और द्वितीयेश यदि पाप ग्रहों से प्रभावित हो तो वायुजन्य उन्माद।

• शनि और द्वितीयेश यदि सूर्य से प्रभावित हो तो राजकोप के कारण उन्माद।

• शनि और द्वितीयेश यदि मंगल से

युत हो तो पित्त सम्बंधित उन्माद।

• सूर्य–चन्द्र की युति (अमावस्या का जन्म) लग्न या त्रिकोण भाव में हो, शनि या मंगल की होरा हो, शनिवार या मंगल का दिन हो और गुरु केंद्र में हो तो जातक उन्मादग्रस्त होता है।

• शनि–चन्द्रमा की युति लग्न में हो और बुध की दृष्टि हो तो जातक अविवेकी विकल होता है।

अन्य शास्त्रीय योग

• चंद्रमा और मंगल लग्न/सप्तम में सम–सप्तक हों।

• राहु एवं चन्द्रमा लग्न में हो और अशुभ ग्रह त्रिकोणों में हों। यह योग पिशाच–ग्रस्त योग भी कहलाता है।

• शनि–मंगल की युति लग्न में, चंद्रमा षष्ठ में, बुध दशम में मीन राशिस्थ हों। यह योग केवल मिथुन लग्न में ही संभव है।

• चन्द्रमा–राहु की युति अष्टम में हो। यह योग मिर्गी योग भी है।

• राहु लग्नस्थ हो और चन्द्र षष्ठम में हो। यह योग भी मिर्गी योग होता है।

• शनि–राहु की युति पंचम में, बुध द्वादश में और पंचमेश की युति अशुभ ग्रह से हो या उस पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो दिमाग कमजोर होता है और जातक बातों को लंबे समय तक याद नहीं रख पाता।

• अशुभ ग्रह लग्न में या लग्न को दृष्ट करते हों और शनि पंचमस्थ हो या शनि की लग्नेश के साथ युति हो तो जातक जड़बुद्धि होता है।

उदाहरण–1 : जन्म तारीख : 9 जुलाई 1925, जन्म समय : 12 बजे, जन्म स्थानः बंगलुरु, लिंग : पुरुष।

जन्मकुंडली

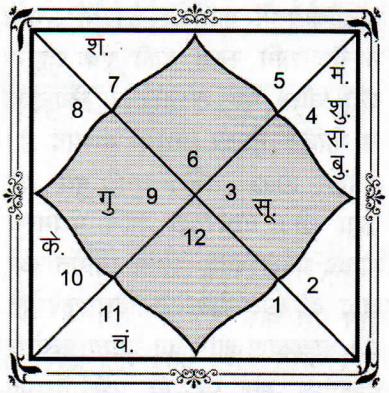

नवांश कुंडली

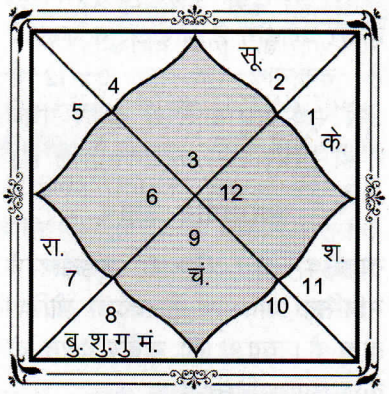

इस प्रसिद्ध अभिनेता ने दो बार असफल प्रयास के बाद 10 अक्तूबर 1964 को बुध–केतु में शराब के साथ अधिक नींद की गोलियां खा कर आत्महत्या की थी।

कुंडली में लग्नेश बुध नीच राशिस्थ मंगल, शनि और राहु/केतु से पीड़ित है, चन्द्र अशुभ स्थित, राहु के नक्षत्र में एवं अशुभ मंगल से पीड़ित है और पंचम भाव पर भी अशुभ प्रभाव है। चन्द्रमा केमद्रुम योग में है और शुभ प्रभाव रहित है। बुध–केतु में जातक ने आत्महत्या जैसा जघन्य अपराध किया। गोचर में नीच राशिस्थ मंगल का बुद्धि पर और नीच राशिस्थ चन्द्र पर वक्री शनि की दृष्टि है।

उदाहरण–2 : जन्म तारीख : 5 अक्तूबर 1954, जन्म समय : 6:50 बजे, जन्म स्थानः दिल्ली, लिंग : पुरुष।

जन्मकुंडली

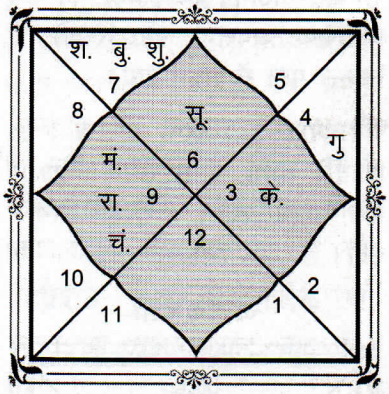

नवांश कुंडली

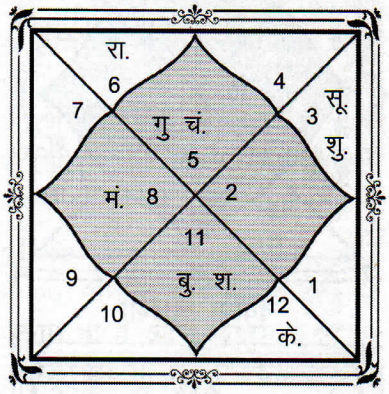

सितम्बर 1993 में राहु की महादशा शुरू होते ही जातक मानसिक अवसाद, अनावश्यक भय और फोबिया आदि से पीड़ित हुआ। जातक की स्थिति फरवरी 1994 में सुधरी जब गुरु की प्रत्यंतर आयी।

चन्द्रमा केमद्रुम योग में, चतुर्थ भाव में राहु से अंशात्मक निकटता, शनि से अंशात्मक निकटता के साथ दृष्ट और मंगल से युति से पीड़ित है। लग्न, राहु/केतु अक्ष पर और सूर्य से अशुभ प्रभावित है। लग्नेश बुध, शनि से अंशात्मक निकटता के साथ युत है। चन्द्र की नवांश में बेहतर स्थिति, जन्म कुंडली में पंचम भाव पर शुभ राशिस्थ गुरु के प्रभाव

और पंचमेश शनि की शुभ स्थिति के कारण जातक स्वजनों के बहुत समझाने और चिकित्सकीय सहायता से कुछ महीनों की अवधि के बाद मानसिक अवसाद की स्थिति से निकल पाने में सक्षम रहा।

उदाहरण–3 : जन्म तारीख : 25 फरवरी 1973, जन्म समय : 23:00 बजे, जन्म स्थान : मुंबई, लिंग : स्त्री।

जन्मकुंडली

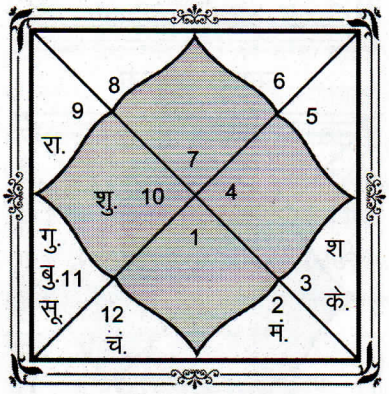

नवांश कुंडली

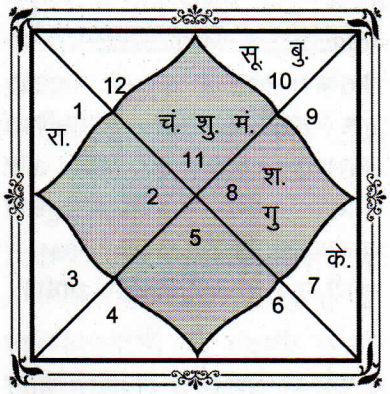

जातिका एक अभिनेत्री थी जिन्होंने अप्रैल 1993 में आत्महत्या कर ली थी।

जन्म कुंडली में चन्द्र अशुभ स्थित एवं शनि से पीड़ित है। चंद्रमा नवांश में शनि की राशि में मंगल से युत है। लग्नेश के राशीश शनि हैं। नवांश में शनि स्वयं लग्नेश है। विवेक के कारक गुरु भी दोनों कुंडलियों में शनि के अशुभ प्रभाव में हैं। शनि स्वयं वक्री एवं राहु/केतु अक्ष पर अंशात्मक निकटता से पीड़ित होकर अशुभ फलप्रद है। अप्रैल 1993 शनि/सूर्य/बुध की दशा थी। गोचरवश शनि पंचमस्थ होकर प्रबल साढ़े–साती निर्मित कर चन्द्र को अत्यधिक प्रभावित कर रहे थे। गोचरवश शनि का प्रभाव प्रत्यंतर दशानाथ बुध पर भी पूर्ण है जो अस्त/वक्री एवं नवांश अशुभ स्थित होकर बलहीन हैं और अशुभ फलप्रद हैं। दशानाथ सूर्य–शुक्र 2/12 हैं और सूर्य शत्रु राशिस्थ होकर पंचम में ही गोचर शनि की गिरफ्त में है।

ज्योतिषीय उपाय

ज्योतिष के अनुसार कुंडली में मानसिक अवसाद में चंद्रमा पीड़ित होता है। चंद्रमा को सबल करने के कुछ उपाय निम्न हैं :

- शिवजी की आराधना करें।
- चाँदी के गिलास में पानी पीयें।
- सोमवार का व्रत रखें।
- चन्द्रमा से सम्बन्धित वस्तुओं के दान के लिए महिलाओं को सुपात्र माना गया है। इसीलिए ब्राह्मण या गरीब स्त्री को सोमवार के दिन सफेद वस्त्र, चावल, दूध, जल आदि का दान दें।
- प्रतिदिन दूध नहीं पीयें, सफेद वस्त्र नहीं पहनें, चंद्रमा सम्बंधित रत्न धारण नहीं करें और सुगंध आदि का प्रयोग नहीं करें।
- चन्द्रमा माता के कारक हैं इसीलिए माता और माता समान महिला का आदर और सेवा करें।
- देर रात्रि तक नहीं जागें।
- घर में दूषित जल का संग्रह नहीं होने दें।

इसके अतिरिक्त, लग्नेश को सबल करने के उपाय करना भी लाभदायक होता है। ❐

पता–सोम अपार्टमेंट्स,
बी–301, सेक्टर–6, प्लॉट–24,
द्वारका, नई दिल्ली–110075
दूरभाष :9810162371

कंप्यूटर जन्माक्षर

विश्व प्रसिद्ध सॉफ्टवेयर लियो स्टार द्वारा निर्मित

• नवजात शिशुओं के लिये भाग्यशाली नाम एवं नक्षत्रफल
• विवाह के लिए कुंडली मिलान • लाल किताब के सरल उपाय • ज्योतिषीय सरल उपाय • अंकशास्त्र • एस्ट्रोग्राफ एवं प्रश्नफल

नोट : यहां फ्यूचर पॉइंट की ज्योतिषीय सामग्री भी मिलती है।

संपर्क : कुसुम गर्ग,
B-16, Shreeji Bunglows, Sun Pharma Road, Vadodara-390020, Gujarat, Phone : 09327744699

सेवाएं : वशीकरण, ऊपरी बाधा, काम बंधन खोलना, पितृ दोष, काल सर्प दोष शांति, ग्रह बाधा शांति, तांत्रिक अनुष्ठान, जाप, हवन तथा कर्मकांड एवं महामृत्युंजय एवं गायत्री जाप के लिए संपर्क करें : **राजेश्वर दाती जी महाराज– फोन : 9212120817, ए–32–ए, जवाहर पार्क, देवली रोड, नयी दिल्ली–62**